8–3–67 रिकार्ड– धीरज धर मनवा..... ओमशांति प्रातःक्लास

यह कौन कह सकते हैं बच्चों को?बाप ही कहते हैं हे बच्चों!सबको ही कहना होता है ;क्योंकि सभी दुःखी अधीर्य हैं।बाप को याद करते हैं कि दुःख से आकर लिबरेट करो। सुख का रास्ता बताओ। अब मनुष्यों को उसमें भी खास भारतवासियों को यह पता नहीं है, याद नहीं है कि हम बहुत सुखी थे। भारत प्राचीन से प्राचीन खंड था। वंडर ऑफ दी वर्ल्ड कहते हैं ना। यहां माया के राज्य में 7 वंडर्स गाये जाते हैं। वो तो है स्थूल वंडर्स। बाप समझाते है। यह माया के वंडर्स हैं जिनमें दुःख है। राम (बाप) का वंडर है स्वर्ग। वो है वंडर आफ दी वर्ल्ड। भारत स्वर्ग था हीरे जैसा था। वहां देवी देवताओं का राज्य था। यह भारतवासी सब भूल गये हैं। भल देवताओं के आगे माथा टेकते हैं। पूजा करते हैं ;परंतु हूबहू जैसे कि बंदर। जिनकी पूजा करते हैं उनकी बायोग्राफी को जानते नहीं हैं।जानना चाहिए ना। अंधश्रद्धालू जितने भारतवासी हैं उतनी कोई और कौम नहीं। वो फिर जानते हैं बुद्ध ने बौद्धी धर्म, इब्राहिम ने इस्लाम धर्म स्थापन किया। मुहम्मद ने मुसलमान धर्म स्थापन किया। क्रिश्चियन को भी पता है कि क्राइस्ट ने फलाने सम्वत में धर्म स्थापन किया। बाकी यह तो जो हिंदू कहलाने वाले हैं, वास्तव में हिंदू धर्म कोई है नहीं। हिन्दुस्तान तो शहर का नाम है। यह नहीं समझते हैं कि हम हिंदुस्तान के रहने वाले हैं। हिंदू कोई धर्म थोड़े ही है। आदि सनातन देवी देवता धर्म था यह भी कोई नहीं जानते हैं।इतने तुच्छ बुद्धि हो गये हैं। यह बेहद का बाप बैठ समझाते हैं।यहां तुम आये हो पारलौकिक बाप के पास। पारलौकिक बाप ही स्वर्ग स्थापन कर सकते हैं। कोई मनुष्य नहीं कर सकते हैं। गीता में मनुष्य का नाम डाल दिया है। जो कि पूरे 84 जन्म लेते हैं। जिसके लिए कहते हैं कि कृष्ण भगवानोवाच कि मैं तुमको राजयोग सिखाता हूँ। अब कृष्ण तो बच्चे2 कह नहीं सकते। कृष्ण की आत्मा खुद ही इस समय पतित है।वो भी बाप से सुन रही है। इनको भी बाप कहते हैं हे कृष्ण की तमोप्रधान आत्मा तुम भी अपने जन्मों को नहीं जानती हो। तुम कृष्ण थे तो सतोप्रधान थे। फिर 84जन्म लेते2 अभी तुम तमोप्रधान बन गये हो। भिन्न2 नाम तुम्हारे पड़े हैं।अभी तुम्हारा नाम ब्रह्मा रखा है। ब्रह्मा सो श्रीकृष्ण वा विष्णु बनेंगे। बात एक ही है। ब्रह्मा सो विष्णु ,विष्णु सो ब्रह्मा। ब्रह्मामुखवंशावली ब्राह्मण ही फिर सो देवता बनते हैं। वो ही देवी देवताओं को फिर शूद्र बनना होता है। अब फिर ब्राह्मण बने हो। अब बाप बैठ तुम बच्चों को समझाते हैं। यह है भगवानोवाच। तुम हो गये स्टुडेंट तो तुमको खुशी कितनी होनी चाहिए ;परंतु इतनी रहती नहीं है। धनवान धन के नशे में बहुत खुश रहते हैं नां यहां भगवान के बच्चे बने हो तो भी इतनी खुशी नहीं रहती है।समझते ही नहीं है। एप्स अर्थात् बंदर बुद्धि है। तकदीर में ही नहीं है तो ज्ञान की धारणा कर ही नहीं सकते हैं।अब तुमको बंदर से मंदिर लायक बनाया जाता है ;परंतु माया का संग भी कम नहीं है। गाया भी जाता है संग तारे कुसंग बोड़े। बाप का संग तुमको मुक्ति जीवनमुक्ति में ले जाता है। फिर रावण का कुसंग तुमको दुर्गति में ले जाता है। 5विकारों का संग हो जाता है। सभी धर्मों में सत्संग तो बहुत ही करते हैं ;परंतु वो है लतसंग। सीढ़ी से कोई धक्का देंगे तो जरूर नीचे ही गिरेंगे ना। तो वहां भी लात मार कर एकदम नीचे गिरा देते हैं। खुद भी लात खाते हैं और दूसरों को भी लात मारते हैं। किसी की भी सदगति नहीं कर सकते हैं। सर्व का सदगति दाता एक ही है । एक नानक कलैण्डर बनाया हुआ है। वो भी इशारा करते हैं कि एक ही परमात्मा को याद करो। तो सिख लोग फिर भी नानक को ही क्यों याद करते हैं?उनको गुरू क्यों मानते हैं जबकि वो खुद कहते हैं कि उनको याद करो।कितनी सहज बात हैं।यह चित्र तो सिखों को दिखाना चाहिए। कोई भी होगा भगवान का इशारा हमेशा उपर करते हैं। अब बाप बिना बच्चों को परिचय कौन दे? बाप ही बच्चों को अपना परिचय देते हैं। उनको अपना बनाकर सृष्टि की आदि–मध्य–अंतका परिचय देते हैं। बाप कहते हैं मैं तुमको आकर आस्तिक भी बनाता हूँ। त्रिकालदर्शी

भी बनाते हैं। यह कोई साधु–संत आदि नहीं जानते हैं।वो होते हैं हद के ड्रामा। यह है बेहद का। तुम बच्चे जानते हो कि हमने सुख भी बहुत देखा है तो दुःख भी बहुत देखा है। यह भारत उंच ते उंच था। बहुत साहुकार था। अब तो कितना कंगाल है। आगे यहां से कितनी (कनक) गेहूं जाती थी। अब तो बाहर से कितनी आती है। यह क्या हो गया है। रिटर्न तो होना ही है नां। ड्रामा भी बहुत मजे से बना हुआ है। कृष्ण और क्रिश्चियन का हिसाब–किताब है। इन्होंने भारत को लड़ाकर राजधानी ली।अब तुम लड़ाते हों यह ड्रामा में नूंध है।वो आपस में लड़ते हैं। राजाई तो तुमको मिल जाती है। यह बातें कोई जानते नहीं हैं। वो हैं भक्तिमार्ग के गुरू। भक्तिमार्ग के शास्त्रों की अथॉरिटी है।भक्तिमार्ग के राजायें हैं निवृत्ति मार्ग वाले। उनका जैसे कि राज्य है। सभी उनको माथा टेकते हैं। अब प्रजीडेंट तो खुद मालिक है ना। वो (सन्यासी) प्रजा हो गई। फिर भी उनके आगे जाकर माथा टेकते हैं ;क्योंकि वो भक्ति की अथॉरिटी है। भक्ति में भी जो जास्ती अथॉरिटी वाले हैं उनको कम अथॉरिटी वाले माथा टेकते हैं। ज्ञान देने वाला तो एक ही बाप है जो सबकी सदगति करते हैं। अब तुम सत्य नारायण की कथा सुनते हो। नर से नारायण बनने की कथा है। यह भी बड़े अक्षरों में लिख दो कि झूठी गीता से भारत झूठ खण्ड बर्थ नॉट अपेनी बना है। अभी सच्ची गीता से भारत सच्च खंड बर्थ पाउंड बनता है।झूठी गीता में तो पहले2 ही ग्लानी लिखी हुई है कि भगवानोवाच मैं सर्वव्यापी हूँ। अब भगवान कहते हैं कि मैने तो ऐसे कहा नहीं है।तो झूठी गीता पढ़ते2 ग्लानी करते2 भारत की क्या हालत हो गई है। बर्थ नॉट अपेनी बन गये हैं। फिर बाप आकर सच्ची गीता सुनाते हैं। सहज राजयोग सिखाते हैं।तो बर्थ पाउंड बन जाते हैं। बाबा टोटके बहुत समझाते हैं ;परंतु बच्चे देह अभिमान कारण भूल जाते हैं। देही अभिमानी बने तो धारण भी हो। देहअभिमान कारण धारणा होती नहीं है।तो अब बाप समझाते हैं कि मैं थोड़े ही कहता हूँ कि मैं सर्वव्यापी हूँ।सर्वव्यापी कहने से भी भारत ने दुर्गति को पाया है। मुझे तो कहते भी हो तुम मात–पिता..... ..तो उसका अर्थ कया?तुम्हारी कृपा से सुख घरेने.....अब तो दुःख है। यह गायन किस समय का है यह भी समझते नहीं हैं। जैसे पक्षी चूं–चूं करते रहते हैं।अर्थ कुछ भी नहीं होता है। वैसे ही यह भी चूं–चूं करते रहते हैं। अर्थ कुछ नहीं है। बाप बैठ समझाते हैं यह सब है अनराइटियस। किसने अनराइटियस बनाया है?रावण ने। भारत सच्चखंड था तो सब ही सच्च बोलते थे। चोरी, ठगी आदि कुछ भी नहीं था। यहां तो कितनी चोरी–चकारी आदि है। डिफेन्स मिनिस्टर आदि (जलते) हैं खरीददारी करने उसमें अपनी रिश्वत तो खाते ही हैं।गवर्मेंट के ऑफीसर्स खुद गवर्मेंट की चोरी करते हैं।फिर केस चलते हैं। बहुत करके सभी ही ऐसे हैं।कोई विरले अच्छे होते हैं। दुनियां में तो ठगी ही ठगी है। बड़े2 ऑफीसर्स चोरी करते हैं। तो उनको कोई पूछते भी नहीं हैं। गरीब ने कुछ चोरी की झट केस हुआ, तो गये जेल में। उनको कहा ही जाता है पाप की दुनियां।दुःखों की दुनियां। सतयुग को कहा ही जाता है सुखों की दुनियां। यह है विषयस वैश्यालय।सतयुग में है शिवालय। बाप कितनी अच्छी रीति बैठ समझाते हैं। यह है बड़े ते बड़े बाप का स्कूल। बच्चों को यह भी राय दी थी कि तुम जो यह लिखते हो ब्र.कु. ईश्वरीय विश्व विद्यालय सो फिर पीछे लिख दो गॉड फादरली वर्ल्ड यूनिवर्सिटी। अर्थ भी कितना क्लीयर है। विश्व विद्यालय। यह है गॉडली यूनिवर्सिटी।वो है डॉगली यूनिवर्सिटी।रात–दिन का फर्क है। यहां तो एक–दो को गाली देते रहते हैं ना।बाप बच्चे को कहते हैं हे कुत्ते का बच्चा। जो शरूड़ बच्चे होते हैं वो झट कह देते हैं हम कुत्ते का बच्चा तो आप भी कुत्ता ठहरे। जो शैतान बच्चे होते हैं वो तो बाप की भी पाग उतारने देरी नहीं करते हैं। खतम भी कर देते हैं। यह है ही आसुरी सम्प्रदाय। मुख से कहते भी हैं कि रामराज्य चाहिए। तो रावण राज्य ठहरा ना। ऐसे भी नहीं समझते हैं कि हम..... राज्य वाले है।..... .....

परंतु उनमें कुछ भी बुद्धि नहीं है। अब बाप आकर समझदार बनाते हैं। कहते हैं इन विकारों को जीतो तो तुम जगतजीत बनेंगे। यह काम ही महाशत्रु है। बच्चे बुलाते भी इसीलिये हैं कि हम कामी कुत्तों को आक गॉड–गॉडेज बनाओ। सन्यासी लोग फिर अपने को कह देते हैं है शिवोअहम्। कोई फिर ब्रह्मोहम कहते हैं।यह भी पता नहीं है कि ब्रह्म अलग है। शिव अलग है। ब्रह्म महातत्व है। शिव निराकार परमात्मा है। वो फिर कह देते हैं तत्व ज्ञानी ब्रह्म ज्ञानी। सारा दि नही शिवोअहम्, शिवकाशी विश्वनाथ गंगे।बस सारा दिन यही कहते रहते हैं शिव ने फिर गंगा लाई।अब ज्ञान गंगा तो ह्यूमन है ना।बाप की महिमा तो बच्चे ही जानते हैं।आसुरी सम्प्रदाय तो ना बाप को जानते हैं ना ही बाप ही महिमा को जानते हैं।तुम जानते हो वो प्यार का सागर है, सुख का सागर है।बच्चों को भी प्यार का सागर बनना चाहिए।प्यार से ही कोई को भी समझाना है।बाप ज्ञान का सागर है।सबको ज्ञान सुनाते हैं तो यह प्यार है ना।बहुत प्यारे बन जाते हैं।टीचर स्टुडेंट को प्यार से पढ़ाते हैं तो कोई बैरिस्टर ,कोई इंजीनियर आदि बन जाते हैं।बाप कहते हैं कि तुम भी एक दो को प्यार करो।नम्बरवन प्यार तो यही है।बाप का परिचय दो। तुम गुप्त दान करते हो।एक दो के लिए घृणा नहीं रहनी चाहिए।नहीं तो तुमको डंडे खाने पड़ेंगे।तिरस्कार किसी करेंगे तो डंडे खावेंगे।कब भी नफरत नहीं रखो।तिरस्कार नहीं करो।देहअभिमान में आने से ही नफरत करते हैं।देही अभिमानी कभी नफरत नहीं करेंगे।देह अभिमान ही मूतपलीती बना देते हैं।देह अभिमान से ही पतित बने हैं।बाप देही अभिमानी बनाते हैं तो तुम पावन बनते हो।सबको यही समझाओ कि अब 84 का चक्र पूरा हुआ है।देखो महारानी कितनी तंग है। उनको भी फिर घर में बंद कर दिया है।जो हंगामा करते रहते हैं तो उनको फिर रायल रीति से घर में ही बंद कर देते हैं।जो कि कोई भी उनके पास आ नहीं सकें।ऐसे भी कोई नहीं समझे कि उनको जेल में डाला है।कितनी बड़ी महारानी है राजस्थान की।उनको तुम्हारा पत्र जाना चाहिए। तुम क्यों हैरान हो रही है।तुम्हीं सूर्यवंशी महारानी थी।फिर 84जन्म लेते2 उतरते2 अब पतित बन गई हो। अब बाप फिर से महाराजा–महारानी बना रहे हैं।तुम भी आकर बनो।बाप सिर्फ कहते हैं मामेकम् याद करो।तो पावन बन जाओगे।5विकारों की खाद निकल जावेगी।तुम पवित्र बनकर पवित्र दुनियां के मालिक बन जाओगे।इस.....में तो तुम्हारे प्राण भी निकल जावेंगे। जो हंगामा करते हैं उनको फिर उड़ा देते हैं।तो तुम बच्चों को रहमदिल तो बनना है ना।बिचारी महारानी का कल्याण करना है।सारा दिन सर्विस का ही खयालात चलना चाहिए। बाप डायरैक्शन्स देते रहते हैं। ऐसे तो बहुत दुःखी हैं। उनको लिखना चाहिए और बहुत शॉर्ट में। बाप कहते हैं कि मुझे याद करो और वर्से को याद करो। एक शिवबाबा की ही महिमा है।मनुष्यों को बाप की भी महिमा का पता नहीं है।इतने एप्स बुद्धि हैं।हिंदी में भी पत्र लिख सकते हो। सर्विस करने का भी हौसला चाहिए। बहुतों का पत्र लिख सकते हो। बहुत हैं जो आपघात करने बैठ जाते हैं। अब गुरू अगर आपघात करने बैठ जावें तो जो फालावर्स हैं उनका क्या हाल होगा?खुद ही कहते है कि जीवघाती महापापी। उनके फालोवर्स यह नहीं समझते हैं कि उनके गुरू खुद ही जीवघाती महापापी हैं तो हम क्या फालो करें?गुरू को तो फालो करना पड़े। इसने घरबार छोड़ा है वो भी घर–बार छोड़कर जाकर बैठे। फालावर्स को तो फालो करना चाहिए ना। कब नहीं करेंगे। वो फिर पवित्र हैं तो पतित अपने को फालोवर्स क्यों कहलाते हैं?माइयां भी फालोवर्स बनाती हैं।दुनियां में झूठ निरई झूठ है। अब तुमको श्रीमत देने वाला है शिवबाबा। वो है श्री2 शिवबाबा। तुमको बनाते हैं श्री।श्री–श्री तो वो एक ही है।वो कब चक्र में आते नहीं हैं।बाकी तुमको श्री का टाइटिल मिलता है।आजकल तो सभी को श्री का टाइटिल देते रहते हैं।कैसे बंदर बुद्धि हैं।बाप कहते हैं बंदरों ने अपने उपर ताज रख दिया है। कहां तो वो निर्विकारी ,कहां यह विकारी।रात–दिन का फर्क है।तो बाप रोज समझाते रहते हैं कि एक तो देहीअभिमानी बनो और सबको परिचय पहुंचाओ।...

.....